

अजय कुमार पाण्डेय
रायपुर, छत्तीसगढ़

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए विभिन्न वर्गों में महिलाओं को सम्मानित किया जा रहा था। समारोह में उपस्थित महिलाएं उत्सुकतापूर्वक अपना नाम पुकारे जाने की प्रतीक्षा कर रही थीं। प्रत्येक वर्षानुसार इस वर्ष भी मिसेज़ गुरमीत को श्रेष्ठ कर्मठता का पुरस्कार मिलना तय था। कार्यालय के सभी व्यक्ति अध्यक्ष महोदया से उनके संबंधों से परिचित थे। सभी जानते थे कि मिसेज गुरमीत कार्यालयीन कार्य से अधिक अध्यक्ष महोदया के निजी कार्य को महत्व देती हैं। अध्यक्ष महोदया का काम भी गुरमीत के बिना चलता नहीं था। गुरमीत के हिस्से का अधिकांश कार्यालयीन कार्य उनके अधीनस्थ ही देखते थे किन्तु अध्यक्ष महोदया से निकटता को देखते हुए वही सबसे सशक्त उम्मीदवार दिखाई दे रही थीं।

सभागार में हल्की-हल्की फुसफुसाहटें हो रही थीं। कुछ लोग मुस्कुरा रहे थे, कुछ के चेहरे पर निराशा साफ झलक रही थी। सबको लगभग विश्वास था कि इस बार भी वही नाम पुकारा जाएगा।

अध्यक्ष महोदया मंच पर आईं और पुरस्कार की घोषणा से पहले उन्होंने कहा—
इस वर्ष हमने एक छोटा सा बदलाव किया है। पुरस्कार केवल सिफारिश या निकटता के आधार पर नहीं, बल्कि पूरे वर्ष के कार्य-विवरण और योगदान के आधार पर दिया जाएगा।

यह सुनकर सभागार में सन्नाटा छा गया। मिसेज़ गुरमीत का चेहरा थोड़ी देर के लिए फीका पड़ गया।

अध्यक्ष महोदया ने लिफाफा खोला और नाम पढ़ा—
इस वर्ष श्रेष्ठ कर्मठता का पुरस्कार जाता है... मिस सीमा वर्मा को।

पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा। सीमा वर्मा वही कर्मचारी थीं जो चुपचाप अपने काम में लगी रहती थीं। अक्सर वही गुरमीत के हिस्से का भी बहुत सा काम संभालती थीं, पर कभी इसका श्रेय नहीं लिया।

सीमा मंच पर पहुँचीं तो उनकी आँखों में आश्चर्य और खुशी दोनों थे। अध्यक्ष महोदया ने मुस्कुराते हुए कहा,
कभी-कभी सच्ची मेहनत को पहचानने में देर हो जाती है, पर वह अनदेखी नहीं रहती।

उस दिन के बाद कार्यालय का माहौल बदल गया। लोगों को यह विश्वास हुआ कि मेहनत और ईमानदारी का मूल्य अवश्य मिलता है।

और मिसेज़ गुरमीत...
वह भी समझ गईं कि सम्मान केवल निकटता से नहीं, बल्कि सच्चे परिश्रम से मिलता है।